हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या - 10

दिनांक 09/08/2020

बेनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)

कामायनी का महाकाव्यत्व

समय की गति के अनुसार काव्य के स्वरूप और उसके मानदण्ड में भी परिवर्तन होते रहते हैं जीवन जगत के प्रति कवि के दृष्टिकोण बदलते हुए प्रतीत होते हैं और इस परिवर्तन के फलस्वरूप जब वह काव्य सृजन करता है तो उसके काव्य के दोनों पक्षों अर्थात आत्मपक्ष और रूप पक्ष में भी परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं। काव्य के इन परिवर्तित रूपों के साथ जब उसका मानदण्ड नहीं बदलता अथवा उसे प्राचीन मानदण्ड के अनुकूल ही परखा जाता है तब कवि और काव्य के प्रति न्याय नहीं होता। हिन्दी को विरासत के रूप में विशाल गहन साहित्य संस्कृत से प्राप्त हुआ है। इसकी प्राप्ति में हिन्दी का हित अनहित दोनों हुआ है। अनहित इस रूप में हुआ है कि प्राचीन मानदण्डों को ब्रह्मवाक्य समझकर आलोचकों ने उन्हें ज्यों का त्यों व्यवहृत करने का प्रयत्न किया है दूसरे यह कि नये साहित्य की आवश्यकताओं के अनुरूप नवीन साहित्य की रचना की सम्भावनाओं को स्वतंत्र रूप से विकसित करने का अवसर नहीं मिला। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्य शास्त्र के सम्पर्क में आने के कारण जहाँ हमारे ज्ञान का विस्तार हुआ है, वहाँ संस्कृत साहित्य शास्त्र और पाश्चात्य

साहित्यशास्त्र के मानदण्डों में रस्सा-कसी प्रारंभ हो गयी। परिणाम यह हुआ कि आलोचकों ने दोनों में से एक को ही अपनी कसौटी बनाना श्रेयस्कर समझा। इनमें कुछ ने मध्यम मार्ग का अनुसरण करते हुए अर्थात् अपनी आलोचना पद्धति में दोनों का समन्वय किया। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसी स्थिति में हिन्दी के अपने साहित्यशास्त्र के विकास की सम्भावनाएँ दब गयीं आगे उसका क्या स्वरूप होगा, यह कहना कठिन होगा।

कवि जयशंकर प्रसाद जी कामायनी को भावात्मक महाकाव्य का रूप देना चाहते थे। साहित्यशास्त्र की कट्टरता और पाश्चात्य संकटता का प्रभाव पूरे छायावाद काव्य के मूल्यांकन पर पड़ा है। इसी के फलस्वरूप कामायनी के महाकाव्य के सम्बन्ध में कई प्रकार के मत हैं। संस्कृत महाकाव्य के सभी लक्षणों में से कुछ के अभाव में उसे खण्डकाव्य या रूपक काव्य माना गया है। किसी ने पाश्चात्य और संस्कृत साहित्य शास्त्र के लक्षणों का समन्वय कर उसे महाकाव्य कहा। इस प्रकार के मत कामायनी के सन्दर्भ में आज भी प्रचलित हैं। यद्यपि आलोचकों के घेरे के बाहर पाठकों के घेरे में कामायनी के महाकाव्यत्व में प्रतिष्ठा प्राप्त है।

कामायनीकार अपने युग के बुद्धिवाद को कम करने के लिए तथा उसमें हृदय तत्व भरने के लिए भावात्मक महाकाव्य की आवश्यकता महसूस करता है।

इसलिए उसे आपातलक रूप प्रदान किया।

संस्कृत साहित्य में महाकाव्य को प्रबंध काव्य के अन्तर्गत ग्रहण किया गया है और विभिन्न आचार्यों ने महाकाव्य के लक्षणों का निरूपण किया गया है। कतिपय स्थूल लक्षणों को छोड़कर इन सबके विचारों में तात्विक एकता पाई जाती है। भामह के अनुसार महाकाव्य सर्गबद्ध होता है। उसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्ति का विधान होता है। उसमें नाटकों की सभी संधियां पायी जाती हैं। महान चरित्र, रस, अलंकार की योजना होती है। उसमें आक्रमण प्रकृति राजदरबार आदि के वर्णन होते हैं तथा लोक मर्यादा के अतिरिक्त नायक की विजय होती है।

इसके बाद आचार्य दण्डी ने आचार्य भामह के लक्षणों को स्वीकार करते हुए कतिपय अन्य लक्षणों का समावेश भी किया। उन्होंने महाकाव्य के आरंभ में आशीर्वचन देवस्तुति, कथावस्तु सूचक पदों का होना भी स्वीकार किया। उन्होंने सर्गबद्धता, चतुर्वर्ग प्राप्ति, उदात्तनायक, नगर, समुद्र, पर्वत, ऋतु, चन्द्रोदय, सूर्योदय आदि भामह द्वारा गिनाये लक्षणों को पूर्णतः मान लिया।

सम्पूर्ण संस्कृत साहित्यशास्त्र द्वारा निरूपित महाकाव्य के लक्षणों को मुख्य रूप से इस प्रकार कहा जा सकता है:—

1. महाकाव्य सर्गबद्ध होता है।

2.) उसका आख्यान ऐतिहासिक होता है

3.) नायक धीरोदात्त होता है।

4.) रसों की स्थिति आवश्यक है

5.) सरस शैली एवं सजीव वर्णन है।

6.) चतुर्वर्ग की प्राप्ति ।

कामायनी की रचना में कवि का उद्देश्य भावात्मक काव्य के प्रणयन का था, स्थूल घटनाओं और दर्शन काव्य आध्यात्म विचार सभी विषयों का स्थान है। कामायनी में प्रसाद जी का प्रौढ़ व्यक्तित्व अपनी समस्त विशेषताओं के साथ प्रकट हुआ है। जीवन के प्रमुख समस्याओं के साथ ही उन्होंने युग और समाज की समस्याओं का वैज्ञानिक हल प्रस्तुत किया है। समरसता के जिस सिद्धान्त की प्रतिष्ठा कवि ने की है, वह केवल व्यक्तिगत साधना की वस्तु नहीं वरन् उसकी उपयोगिता व्यावहारिक क्षेत्र में भी है।

अतः किसी भी दृष्टि से कामायनी को उसके महत्वपूर्ण स्थान से थोड़े से लक्षणों के अभाव में गिराया नहीं जा सकता।

प्रस्तुतकर्ता

दिनांक
07/08/2020

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं० - 8292271041
ईमेल - benamkumar13@gmail.com